छन्दस्सौरभम्

भाषा की दृष्टि से 'छन्दस्' का शाब्दिक अर्थ 'आच्छादन' है। इस प्रकार छन्दों के द्वारा भाव या रस को आच्छादित किया जाता है। संस्कृत-साहित्य छन्दः शास्त्र के अनेक प्रसिद्ध आचार्यों एवं उनके बहुमूल्य ग्रन्थों से विभूषित है।

आचार्य दण्डी छन्दस् को काव्यरूपी गम्भीर सागर को पार करने के लिए नौका बताते हैं–

'सा विघा नौस्तितीर्षूणां गम्भीरं काव्यसागरम्।'

(काव्यादर्श–1–12)

काव्य के प्रमुखतया तीन भेद माने जाते हैं–गद्य, पद्य तथा मिश्र–

'गद्यं पद्यं च मिश्रं च तत्त्रिधैव व्यवस्थितम्।'

(काव्यादर्श–1.11)

उनमें चार चरण वाली रचना को 'पद्य' नाम दिया जाता है–

'पद्यं चतुष्पदी' .... (काव्यादर्श 1–11)

संस्कृत में प्रत्येक पद्य या श्लोक में चार पाद या चरण होते हैं–पहला, दूसरा, तीसरा तथा चौथा। पहला और तीसरा चरण–विषम–चरण तथा दूसरा एवं चौथा–सम–चरण कहलाते हैं। प्रत्येक चरण में वर्णों या मात्राओं की संख्या निश्चित होती है तथा विराम (रुकना) भी वर्णों की निश्चित संख्या के बाद ही होता है–इन सब बातों का सम्यक् ज्ञान हमें छन्दस् शास्त्र से प्राप्त होता है।

छन्द सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं–

वार्णिक एवं मात्रिक।

वार्णिक–छन्दों में प्रत्येक चरण के वर्णों की संख्या तथा क्रम निर्धारित होते हैं तथा मात्रिक छन्दों में प्रत्येक चरण की मात्राओं की संख्या तथा क्रम निर्धारित होते हैं। छात्रों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए केवल 'आर्या' 'छन्द मात्रिक छन्द है क्योंकि इसमें मात्राओं की संख्या सुनिश्चित होती है। इसमें वर्णों की संख्या तथा क्रम का कुछ महत्त्व नहीं होता।

वार्णिक छन्द तीन प्रकार के होते हैं–समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त।

युक्समं विषमं चायुक्स्थानं सद्भिर्निगद्यते।
सममर्धसमं वृत्तं विषमं च तथा परम्।।'

–वृत्तरत्नाकर–1.13

समवृत्त छन्दों में चारों चरणों में वर्णों का क्रम एवं उनकी संख्या समान होती है। इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता आदि छन्द समवृत्त हैं।

अर्धसमवृत्त छन्दों में प्रथम तथा तृतीय और द्वितीय व चतुर्थ चरणों में समानता होती है। पुष्पिताग्रा, वियोगिनी आदि छन्द अर्धसमवृत्त हैं।

विषमवृत्त छन्दों में चारों चरणों में भिन्न भिन्न क्रम एवं संख्या वाले वर्ण होते हैं। आर्या छन्द विषमवृत्त है।

एक स्वर का उच्चारण करने में लगने वाला समय 'मात्रा' कहलाता है। इस प्रकार लघु या दीर्घ वर्णों के अनुसार मात्रा भी लघु या दीर्घ होती है। दीर्घ (गुरु) वर्ण को प्रकट करने के लिए वर्ण पर (ऽ) का चिह्न लगाया जाता है तथा लघु (ह्रस्व) वर्ण को प्रकट करने के लिए '।' का चिह्न लगाया जाता है।

छात्र ध्यान रखें कि संस्कृत वाङ्मय में केवल 'अ, इ, उ, ऋ, लृ'–ये पांच वर्ण ह्रस्व (लघु) हैं, शेष सभी मात्राएँ अर्थात् 'आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ'–सब दीर्घ हैं। ह्रस्व वर्णों की एक मात्रा में गिनती होती है तथा दीर्घ वर्णों की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। इस प्रकार ह्रस्व स्वर तथा ह्रस्व स्वर (या मात्रा) सहित व्यञ्जन लघु होते हैं और सब दीर्घ स्वर तथा दीर्घ-स्वर युक्त व्यञ्जन गुरु होते हैं। छात्रों को और अधिक स्पष्ट करने के लिए–क, कि, कु, कृ या इसी प्रकार के अन्य स्वर युक्त व्यञ्जन ह्रस्व होते हैं और उनकी एक मात्रा (1) होती

है। इनके अतिरिक्त का, की, कू, कॄ, के, कै, को, कौ या इसी प्रकार के अन्य स्वर-युक्त व्यञ्जन दीर्घ होते हैं और इनकी दो मात्राएँ (ऽ) होती हैं।

छन्द:शास्त्र में कुल आठ गण होते हैं तथा प्रत्येक गण में तीन-तीन वर्ण होते हैं। छन्द:सूत्र इस प्रकार है-

आदि मध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्।।

अर्थात्	यगण	=	।ऽऽ	आदिलघु
	रगण	=	ऽ।ऽ	मध्यलघु
	तगण	=	ऽऽ।	अन्त्यलघु

यगण, रगण और तगण क्रमश: आदि, मध्य और अन्तिम लघु वर्ण वाले होते हैं। भगण, जगण तथा सगण क्रमश: आदि, मध्य तथा अन्तिम गुरु वर्ण वाले होते हैं और मगण में सारे गुरु वर्ण तथा नगण में सारे लघु वर्ण होते हैं-यही इस सूत्र का अर्थ है।

भगण	=	ऽ।।	आदिगुरु
जगण	=	।ऽ।	मध्यगुरु
सगण	=	।।ऽ	अन्त्यगुरु
मगण	=	ऽऽऽ	(तीनों गुरु)
नगण	=	।।।	(तीनों लघु)

इन्हीं आठ गणों को एक अत्यन्त सरल सूत्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है-

। ऽ ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ
य मा ता रा ज भा न स ल गा:

सूत्र के प्रथम आठ वर्ण आठ गणों को द्योतित करते हैं और अन्तिम दो वर्ण 'ल' और 'गा:' लघु और गुरु वर्ण को प्रकट करते हैं। गण बनाने की सरल विधि है-जिस गण को द्योतित करना है उसकी तथा उसके आगे की दो मात्राएँ जोड़ने (कुल तीन) से वह गण बन जाता है, उदाहरणार्थ :-

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण छन्द
उनके लक्षण एवं उदाहरण

1. आर्या

लक्षणः – यस्याः पादे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या।।

आर्या एक मात्रिक छन्द है अर्थात् इसमें मात्राओं की गणना की जाती है। इसके प्रथम चरण में बारह मात्राएँ, दूसरे में अट्ठारह मात्राएँ, तीसरे में बारह और चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण–

S I I S S I I S
आ परितोषाद्विदुषां = 12 मात्राएँ

I S I S S I S I S S S
न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्। = 18 मात्राएँ

I I I I I S I S S
बलवदपि शिक्षिताना- = 12 मात्राएँ

S S S S I S S S
मात्मन्यप्रत्ययं चेतः।। = 15 मात्राएँ

(अभिज्ञान० 1-2)

I I I I S I I S S
उदयनवेन्दुसवर्णा- = 12 मात्राएँ

S I I S S I S I S S S
वासवदत्ताबलौ बलस्य त्वाम्। = 18 मात्राएँ

S S I S I S S
पद्मावतीर्णपूर्णौ = 12 मात्राएँ

I S I S S I S S S
वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् = 15 मात्राएँ

(स्वप्न० I. 1)

इस प्रकार यहाँ पहले और तीसरे चरणों में बारह मात्राएँ, दूसरे में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ हैं। अतः यहाँ आर्या छन्द है।

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में इस छन्द के अड़तीस (38) तथा स्वप्नवासवदत्ता में इसके तीन (3) उदाहरण प्राप्त होते हैं-

अभिज्ञान०-	(i)	23, 13, 16, 17, 21, 25, 28, 29, 34 (10).
	(ii)	1, 8 (2).
	(iii)	2, 4, 5, 9, 12, 14, 15, 19, (8).
	(iv)	12, 16, 21 (3)
	(v)	11, 13, 16, 18, 21, 28, 31 (7).
	(vi)	2, 3, 7, 15, 19, 21, 31 (7).
	(vii)	22 (1). (कुल = 38)
स्वप्न०-	(i)	1.
	(iv)	3, 5, (2) (कुल = 3)

2. श्लोक (अनुष्टुप्)

लक्षण: "श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं,
सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं,
सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।"

अनुष्टुप् एक वार्णिक छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। इसके चारों चरणों में छठा अक्षर गुरु तथा पाँचवाँ लघु होता है। दूसरे और चौथे चरणों में सातवाँ अक्षर लघु होता है तथा पहले और तीसरे चरणों में सातवाँ अक्षर गुरु होता है। यह अत्यन्त प्रचलित छन्द है। वाल्मीकि रामायण से ही इसका शुभारम्भ हुआ था। रघुवंश का आरम्भ भी इसी छन्द से हुआ है।

उदाहरण :

I S S
तवास्मि गीतरागेण
I S I
हारिणा प्रसभं हृतः।

ا S S
एप राजेव दुष्यन्तः
ISI
सारङ्गेणातिरंहसा।।　(अभिज्ञान०-I-5)

तथा–

ا S S
भृत्यैर्मगधराजस्य
I S I
स्निग्धैः कन्यानुगामिभिः।
I S S
धृष्टमुत्सार्यते सर्व-
I S I
स्तपोवनगतो जनः।। (स्वप्न० I–2)

इस प्रकार यहाँ छठा वर्ण चारों चरणों में गुरु तथा पाँचवा लघु है और दूसरे तथा चौथे चरणों का सातवाँ वर्ण लघु है। पहले और तीसरे चरणों में सातवाँ वर्ण गुरु है। अतः यहाँ अनुष्टुप् छन्द है।

इसके अभिज्ञानशाकुन्तल में सत्ताईस (27) उदाहरण प्राप्त होते हैं–

(i) 5, 6, 11, 12, 26, (5).

(ii) 13, 16, 17, (3).

(iii) 1, 17, 20 (3).

(iv) 4, 7 (2).

(v) 14, 24, 26, 29 (4).

(vi) 23, 28, 32 (3).

(vii) 9, 13, 14, 15, 23, 28, 29 (7) (कुल–27)

स्वप्नवासवदत्ता में इसके अट्ठाईस उदाहरण प्राप्त होते हैं–

(i) 2, 7, 10, 15 (4).

(ii) 4, 6, 7, 8, 9, 10 (6).

(iii) 6, 7, 8, 9, 10, 11 (6).

(iv) 3, 6, 7, 9, 11, 12, 13, 14, 16, 17, 18, 19 (12)
(कुल-28)

3. इन्द्रवज्रा

लक्षण :– "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।"

अर्थात् इन्द्रवज्रा में प्रत्येक चरण में तगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति पाँच वर्णों के बाद होती है।

उदाहरण :

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
अर्थो हि कन्या परकीय एव

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतः

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जातो ममायं विशदः प्रकामं

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

(अभिज्ञान० IV-22)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः तगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण हैं, अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है। इस श्लोक के प्रथम चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्दःपूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः इस अन्तिम वर्ण को अवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में उपरोक्त श्लोक के अतिरिक्त इन्द्रवज्रा छन्द का केवल एक उदाहरण और उपलब्ध होता है। स्वप्नवासवदत्ता में इसका स्वतन्त्र रूप से कोई उदाहरण प्राप्त नहीं होता।

4. उपेन्द्रवज्रा

लक्षण :– उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततोगौ।

अर्थात् उपेन्द्रवज्रा में प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति पाँच वर्णों के बाद होती है।

उदाहरण :

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
उपेत्य नागेन्द्रतुरङ्गतीर्णो

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तमारुणिं दारुणकर्मदक्षम्।

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
विकीर्ण बाणोग्रतरङ्गभङ्गे

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
महार्णवाभे युधि नाशयामि।। (स्वप्न० V-13)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं। इस श्लोक के चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्दःपूर्ति गुरु वर्ण से होती है। अतः इसे आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता है।

इस छन्द का स्वतन्त्र रूप से स्वप्नवासवदत्ता में केवल एक ही (V-13) उदाहरण प्राप्त होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में स्वतन्त्र रूप से इसका कोई उदाहरण प्राप्त नहीं होता।

5. उपजाति

लक्षण :– अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ,
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितामु,
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

अर्थात् उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। यह छन्द इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा–दोनों छन्दों के मिश्रण से बनता है। चारों चरणों में से दो चरणों में इन्द्रवज्रा और दो में उपेन्द्रवज्रा हो सकता है, अथवा एक चरण में इन्द्रवज्रा, तीन में उपेन्द्रवज्रा हो सकता है या तीन चरणों में इन्द्रवज्रा तथा एक चरण में उपेन्द्रवज्रा हो सकता है।

उदाहरण :

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु (इन्द्र०)

त त ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम्। (इन्द्र०)

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
असन्निवृत्यै तदतीतमेते (उपेन्द्र०)

ज त ज गु गु
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
मनोरथा नाम तटप्रपाताः।।–(उपेन्द्र०)(अभिज्ञान०–V. 5)

प्रस्तुत श्लोक के पहले दो चरणों में तगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं, अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है तथा अन्तिम दोनों चरणों में जगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु वर्ण होने से उपेन्द्रवज्रा छन्द है। एक ही श्लोक के कुछ चरणों में इन्द्रवज्रा तथा कुछ में उपेन्द्रवज्रा छन्द होने से यहाँ 'उपजाति' छन्द है।

अन्य उदाहरण :

ज त ज गु गु

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

स्मराम्यवन्त्याधिपतेः सुतायाः (उपेन्द्र०)

त त ज गु गु

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

प्रस्थानकाले स्वजनं स्मरन्त्याः।–(इन्द्र०)

त त ज गु गु

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

वाष्पं प्रवृद्धं नयनान्तलग्नं–(इन्द्र०)

त त ज गु गु

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

स्नेहान्ममैवोरसि पातयन्त्याः।।–(इन्द्र०) (स्वप्न०-V-5)

प्रस्तुत श्लोक के प्रथम चरण में जगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं और यहाँ उपेन्द्रवज्रा छन्द है। शेष तीन चरणों अर्थात् दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण में तगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण होने से इन्द्रवज्रा छन्द है। एक ही श्लोक में दोनों छन्दों का मिश्रण होने से यहाँ उपजाति छन्द है।

स्वप्नवासवदत्ता में उपजाति छन्द का केवल (V.5) एक ही उदाहरण प्राप्त होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में इसके II-7; V-5, 20, 25; VI-10, 24, 26; VII-2, 5. 19.31; कुल ग्यारह उदाहरण प्राप्त होते हैं।

6. शालिनी

लक्षणः–मतौ तो चेच्छालिनी वेदलोकैः।

अर्थात् शालिनी में प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति चार वर्णों के बाद होती है।

उदाहरण :

म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
सा निन्दन्ती स्वानि भाग्यानि बाला
म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
बाहूत्क्षेपं क्रन्दितुं च प्रवृत्ता।
म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
स्त्रीसंस्थानं चाप्सरस्तीर्थमारा- (अभिज्ञान०-V-30)
म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
दुत्क्षिप्यैनां ज्योतिरेकं जगाम्।।

प्रस्तुत श्लोक के प्रथम तीनों चरणों में मगण तगण, तगण तथा दो गुरु वर्ण हैं तथा चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्द: पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अत: इस अन्तिम वर्ण को आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता है। इस प्रकार इस श्लोक में शालिनी छन्द है। अभिज्ञानशाकुन्तल में शालिनी छन्द का यही उदाहरण प्राप्त होता है।

अन्य उदाहरण :

म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
क: कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले
म त त गु गु
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।

म त त गु गु

ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ।। ऽ ऽ ।। ऽ ऽ

एवं लोकस्तुल्यधर्म्मा वनानां

म त त गु गु

ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ।। ऽ ऽ ।। ऽ ऽ

काले काले छिद्यते रुह्यते च।। (स्वप्न० V-13)

प्रस्तुत श्लोक के दूसरे और चौथे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्दः पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः उसे आवश्यकतानुसार दीर्घ माना जा सकता। इस श्लोक के प्रत्येक चरण में मगण, तगण, तगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं, अतः यह श्लोक शालिनी छन्द का उदाहरण है।

स्वप्नवासवदत्ता में इस छन्द के I-13 तथा IV-7 दो उदाहरण और प्राप्त होते हैं।

7. रथोद्धता

लक्षणः– रान्नराविह रथोद्धता लगौ।

अर्थात् रथोद्धता छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण, रगण तथा अन्त में लघु-गुरु के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। यति तीसरे और आठवें वर्ण पर अथवा चौथे तथा सातवें वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

र न र ल गु

ऽ । ऽ ।।। ऽ । ऽ । ऽ

एवमाश्रमविरुद्धवृत्तिना

र न र ल गु

ऽ । ऽ ।।। ऽ । ऽ । ऽ

संयमः किमिति जन्मतस्त्वया।

र न र ल गु

ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।ऽ

सत्त्वसंश्रयसुखोऽपि दूष्यते

र न र ल गु

ऽ।ऽ ।।। ऽ।ऽ ।ऽ

कृष्णसर्पशिशुनेव चन्दनः।। (अभिज्ञान० VII-18)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः रगण, नगण, रगण तथा अन्त में लघु गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण हैं, अतः यह श्लोक रथोद्धता छन्द का उदाहरण है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में इस छन्द का केवल यही उदाहरण प्राप्त होता है।

8. वंशस्थ

लक्षणः– जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

अर्थात् वंशस्थ छन्द में चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं। यति पाँच वर्ण के बाद होती है।

उदाहरण :

ज त ज र

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

यतो यतः षट्चरणोऽभिवर्तते

ज त ज र

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

ततस्ततः प्रेरितवामलोचना।

ज त ज र

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

विवर्तितभ्रूरियमद्य शिक्षते

ज त त र

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

भयादकामापि हि दृष्टिविभ्रमम्।। (अभिज्ञान० I-23)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण हैं, अतः यह श्लोक वंशस्थ छन्द का उदाहरण है। अभिज्ञानशाकुन्तल में इस श्लोक के अतिरिक्त I-18, 22; III-11; IV-1; V-12, 15, 17; VI-13, 18, 29 तथा VII-10, 16, 30–इन श्लोकों में भी वंशस्थ छन्द है।

9. द्रुतविलम्बित

लक्षणः– द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

अर्थात् द्रुतविलम्बित छन्द में प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण तथा रगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं। यति चार चार वर्ण के बाद होती है।

उदाहरण :

न भ भ र
। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ
अभिमुखे मयि संहृतमीक्षितं

न भ भ र
। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ
हसितमन्यनिमित्तकृतोदयम्।

न भ भ र
। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ
विनयवारित वृत्तिरतस्तया

न भ भ र
। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ
न विवृतो मदनो न च संवृतः।। (अभिज्ञान०II-11)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, भगण, भगण तथा रगण हैं, अतः यहाँ द्रुतविलम्बित छन्द है। अभिज्ञानशाकुन्तल में III-16, V-27, VI-8 तथा VII-3 श्लोकों में भी द्रुतविलम्बित छन्द है।

10. प्रहर्षिणी

लक्षणः– त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्।

अर्थात् प्रहर्षिणी छन्द में प्रत्येक चरण में मगण, नगण, जगण, रगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से तेरह वर्ण होते हैं। यति तीन और दस वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

म न ज र गु
ऽऽऽ ।।। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ
एष त्वामभिनवकण्ठशोणितार्थी

म न ज र गु
ऽऽऽ ।।। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ
शार्दूलः पशुमिव हन्मि चेष्टमानम्।

म न ज र गु
ऽऽऽ ।।। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ
आर्त्तानां भयमपनेतुमात्तधन्वा

म न ज र गु
ऽऽऽ ।।। ।ऽ। ऽ।ऽ ऽ
दुष्यन्तस्तव शरणं भवत्विदानीम्।।

(अभिज्ञान० VI-27)

प्रस्तुत श्लोक के, चारों चरणों में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण तथा अन्त में गुरु वर्ण है, अतः यहाँ प्रहर्षिणी छन्द है। इसके अतिरिक्त अभिज्ञानशाकुन्तल, VI-30 में भी प्रहर्षिणी छन्द ही है।

11. रुचिरा

लक्षण :– जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः।

अर्थात् रुचिरा छन्द में प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण के क्रम से तेरह वर्ण होते हैं। यति चार और नौ वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

ज भ स ज गु
।ऽ। ऽ।। ।।ऽ ।ऽ। ऽ
प्रवर्तताम् प्रकृतिहिताय पार्थिव:
ज भ स ज गु
।ऽ। ऽ।। ।।ऽ ।ऽ। ऽ
सरस्वती श्रुतिमहतां महीयताम्।
ज भ स ज गु
।ऽ। ऽ।। ।।ऽ ।ऽ। ऽ
ममापि च क्षपयतु नीललोहित:
ज भ स ज गु
।ऽ। ऽ।। ।।ऽ ।ऽ। ऽ
पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभू:।। (अभिज्ञान० VII. 35)

प्रस्तुत श्लोक में चारों चरणों में क्रमश: जगण, भगण, सगण, जगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण हैं। अत: यह रुचिरा छन्द का उदाहरण है। रुचिरा छन्द का अभिज्ञान० नाटक में केवल यही उदाहरण प्राप्त होता है।

12. वसन्ततिलका

लक्षण :–उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ ग:।

अर्थात् वसन्ततिलका छन्द में चारों चरणों में तगण, भगण, जगण, जगण तथा दो गुरु वर्णों के क्रम से चौदह वर्ण होते हैं। यति आठ और छ: वर्णों पर होती है।

उदाहरण : त भ ज ज गु गु
ऽऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ ऽ
दर्भाङ्कुरेण चरण: क्षत इत्यकाण्डे
त भ ज ज गु गु
ऽऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ ऽ
तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा।

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
आसीद् विवृत्तवदना च विमोचयन्ती

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्।। (अभिज्ञान०-II-12)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **वसन्ततिलका** छन्द है। अभिज्ञानशाकुन्तल में इस छन्द के अन्य उदाहरण हैं–I-8, 27, 31; II-9; III-8, 18, 24; IV–2, 3, 11, 13, 14, 15, 20; V–2, 3, 6, 22, 23; VI–12, 16, 20, 25; VII–4, 6, 17, 25, 26, 32.

अन्य उदाहरण :

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासीत्

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
श्लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना

त भ ज ज गु गु
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः।। (स्वप्न० I. 4)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हैं। अतः यह श्लोक वसन्ततिलका छन्द का उदाहरण

है। इसके अतिरिक्त स्वप्न०-के I–6, 11; IV–1, 2, 3; VI–2, 4, 5, 15 श्लोकों में भी **वसन्ततिलका** छन्द है।

13. मालिनी

लक्षणः–ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

अर्थात् मालिनी छन्द में प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के क्रम से पन्द्रह वर्ण होते हैं। यति आठ और सात वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवंविधैव।

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्।।

(अभिज्ञान०–V-7)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, नगण, मगण यगण तथा यगण हैं। अतः यहाँ **मालिनी** छन्द है। छात्र ध्यान दें कि इस श्लोक के दूसरे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है जबकि छन्दः पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है, अतः छन्दः पूर्ति के लिए इस अन्तिम वर्ण को दीर्घ माना जा सकता है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञानशाकुन्तल के I–10, 19, 20; II–4; III–3; V–8, 19 तथा VII-7, 34 श्लोकों में भी मालिनी छन्द है।

14. शिखरिणी

लक्षणः—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

अर्थात् शिखरिणी छन्द में चारों चरणों में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु वर्ण होता है। इस प्रकार इसके प्रत्येक चरण में सत्रह वर्ण होते हैं। यति छठे और सत्रहवें वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

य म न स भ ल गु
।ऽऽ ऽऽऽ ।।। ।।ऽ ऽ।। । ऽ
अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-

य म न स भ ल गु
।ऽऽ ऽऽऽ ।।। ।।ऽ ऽ।। । ऽ
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।

य म न स भ ल गु
।ऽऽ ऽऽऽ ।।। ।।ऽ ऽ।। । ऽ
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं

य म न स भ ल गु
।ऽऽ ऽऽऽ ।।। ।।ऽ ऽ।। । ऽ
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

(अभिज्ञान० II. 10)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में शिखरिणी छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञान० के I–9, 24; III–6; V–10; VI-9 तथा VII-33 श्लोकों में भी शिखरिणी छन्द है।

अन्य उदाहरण :

य म न स भ ल गु

ISS SSS III IIS SII I S

खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः

य म न स भ ल गु

ISS SSS III IIS SII I S

प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्।

य म न स भ ल गु

ISS SSS III IIS SII I S

परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो

य म न स भ ल गु

ISS SSS III IIS SII I S

रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।

(स्वप्न०-I-16)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में लघु तथा गुरुवर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **शिखरिणी** छन्द है। इसके अतिरिक्त 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रथम अंक के श्लोक संख्या 14 में भी **शिखरिणी** छन्द है।

15. हरिणी

लक्षणः–नसमरसलागः षड्वैदेर्हयैर्हरिणी मता।

अर्थात् हरिणी छन्द में चारों चरणों में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण के क्रम से सत्रह वर्ण होते हैं। यति छठे, दसवें और सत्रहवें वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

सुतनु हृदयात् प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत्।

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

स्त्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया।।

(अभिज्ञान०-VII-24)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा अन्त में लघु-गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **हरिणी** छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञानशाकुन्तल के III-10 तथा IV-19 श्लोकों में भी **हरिणी** छन्द है।

अन्य उदाहरण :

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

अहमवजितः पूर्वं तावत् सुतैः सह लालितो

न　स　म　र　स　ल गु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

दृढमपहृता कन्या भूयो मया न च रक्षिता।

न स म र स लगु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

निधनमपि च श्रुत्वा तस्यास्तथैव मयि स्वता

न स म र स लगु

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

ननु यदुचितान् वत्सान् प्राप्तुम् नृपोऽत्रहि कारणम्।।

(स्वप्न०-VI-8)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण तथा लघु-गुरु वर्ण हैं, अतः यह श्लोक **हरिणी** छन्द का उदाहरण है।

नाटक स्वप्नवासवदत्तम् में हरिणी छन्द एक ही श्लोक (VI-8) में प्राप्त होता है।

16. मन्दाक्रान्ता

लक्षणः–मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।

अर्थात् मन्दाक्रान्ता छन्द में चारों चरणों में मगण, भगण, नगण, तगण तगण तथा गुरु-गुरु वर्ण के क्रम से सत्रह वर्ण होते हैं। यति चार, छः, सात वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

म भ न त त गुगु

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

नैतच्चित्रं यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्री-

म भ न त त गुगु

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

मेकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति।

म भ न त त गुगु

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

आशंसन्ते समितिषु सुरा बद्धवैरा हि दैत्यै-

म भ न त त गुगु

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

रस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहते च वज्रे।।

(अभिज्ञान०-II-15)।

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा अन्त में दो गुरु वर्ण हैं। अतः यह श्लोक मन्दाक्रान्ता छन्द का उदाहरण है। इस श्लोक के दूसरे चरण का अन्तिम वर्ण लघु है तथा छन्दः पूर्ति दीर्घ वर्ण से होती है अतः छन्दः पूर्ति के लिए यह वर्ण दीर्घ माना जा सकता है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञान० के I-15, 33; और II-14 श्लोक भी मन्दाक्रान्ता छन्द के उदाहरण हैं।

17. शार्दूलविक्रीडितम्

लक्षणः—सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

अर्थात् शार्दूलविक्रीडित छन्द में चारों चरणों में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में गुरु वर्ण के क्रम से उन्नीस वर्ण होते हैं। यति 12 और सात वर्ण पर होती है।

उदाहरण :

म स ज स त त गु
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या

म स ज स त त गु
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।

म स ज स त त गु
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः

म स ज स त त गु
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।

(अभिज्ञान०-IV.9)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **शार्दूलविक्रीडित** छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञान० के I-14, 30; II-2, 5, 6; III-7, 23, IV-5, 6, 17, 18; V-9; VI-4, 5, 6, 17 तथा VII-8, 11, 12, 27 श्लोकों में भी **शार्दूलविक्रीडित** छन्द है।

अन्य उदाहरण :

म स ज स त त गु
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ
विस्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्ययाद्

म स ज स त त गु
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ
वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपाः सर्वे दयारक्षिताः।

म स ग स त त गु
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ
भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनान्यक्षेत्रवत्यो दिशो

म स ज स त त गु
ऽऽऽ ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ऽऽ। ऽऽ। ऽ
निःसंन्दिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः।।

(स्वप्न० I. 12)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **शार्दूलविक्रीडित** छन्द है। इसके अतिरिक्त स्वप्न० के I-3, 8; IV-1 तथा V-4, 12 श्लोकों में भी **शार्दूलविक्रीडित** छन्द है।

18. स्रग्धरा

लक्षणः –म्रभ्नैयानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

अर्थात् स्रग्धरा छन्द में चारों चरणों में मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण के क्रम से इक्कीस वर्ण होते हैं। यति सात सात वर्ण पर होती है।

म र भ न य य य
ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।। ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ
या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

म र भ न य य य
ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

म र भ न य य य
ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ ।ऽऽ ऽ।ऽ
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

म र भ न य य य
ऽऽऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

(अभिज्ञान०-I.1)

प्रस्तुत श्लोक के चारों चरणों में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण हैं, अतः इस श्लोक में **स्रग्धरा** छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञानशाकुन्तल के I-7 श्लोक में भी स्रग्धरा छन्द है।

19. अपरवक्त्रम्

लक्षणः –अयुजि ननरला गुरुः समे तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ।

अर्थात् अपरवक्त्र छन्द में प्रथम तथा तृतीय चरण में नगण, नगण, रगण, लघु तथा गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में नगण, जगण, जगण तथा रगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं।

उदाहरण :

न न र ल गु

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ

अनुगतगमना शकुन्तला

न ज ज र

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।

न न र ल गु

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ

परभृतविरुतं कलं यथा

न ज ज र

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्।। अभिज्ञान०-IV-10

प्रस्तुत श्लोक के विषम (1 और 2) चरणों में क्रमशः नगण, नगण रगण, लघु और गुरु तथा सम (2 और 4) चरणों में नगण, जगण, जगण और रगण हैं, अतः यहाँ अपरवक्त्र छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञान० के V-1 श्लोक में भी अपरवक्त्र छन्द है।

20. पुष्पिताग्रा

लक्षणः–अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।

अर्थात् पुष्पिताग्रा छन्द में विषम (1 और 3) चरणों में नगण, नगण, रगण तथा यगण के क्रम से बारह वर्ण होते हैं और सम (2 और 4) चरणों में नगण, जगण, जगण, रगण तथा एक गुरु वर्ण के क्रम से तेरह वर्ण होते हैं।

उदाहरण :

न न र य

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

न नमयितुमधिज्यमस्मि शक्तो

न ज ज र गु

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

धनुरिदमाहितसायकं मृगेषु।

न न र य

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियायाः

न ज ज र गु

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

कृत इव मुग्धविलोकितोपदेशः।। (अभिज्ञान० II-3)

प्रस्तुत श्लोक के विषम (1 & 3) चरणों में क्रमशः, नगण, नगण, रगण और यगण हैं तथा सम (2 & 4) चरणों में क्रमशः नगण, जगण, जगण, रगण और अन्त में एक गुरु वर्ण हैं; अतः यह श्लोक पुष्पिताग्रा छन्द का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त अभिज्ञान० के I-32, VI-11 श्लोकों में भी पुष्पिताग्रा छन्द है।

अन्य उदाहरण :

न न र य

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

श्रुतिसुखनिनदे ! कथं नु देव्याः

न ज ज र गु

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता।

न न र य

I I I I I I S I S I S S

विहगगणरजो विकीर्णदण्डा

न ज ज र गु

I I I I S I I S I S I S S

प्रतिभयमध्युषितास्यरण्यवासम्।। (स्वप्न०-VI.1)

प्रस्तुत श्लोक के विषम चरणों में क्रमशः नगण, नगण, रगण और यगण हैं तथा सम चरणों में क्रमशः नगण, जगण, जगण, रगण तथा अन्त में एक गुरु वर्ण हैं, अतः यहाँ पुष्पिताग्रा छन्द है। इसके अतिरिक्त स्वप्न० के I-5 श्लोक में भी **पुष्पिताग्रा** छन्द है।

21. वियोगिनी (सुन्दरी)

लक्षण : "विषमे ससजा गुरुः समे सभरालोऽथ गुरुर्वियोगिनी।"

अर्थात् वियोगिनी छन्द में विषम (1 & 3) चरणों में सगण, सगण, जगण, तथा गुरु वर्ण के क्रम से दस वर्ण होते हैं तथा सम (2 & 4) चरणों में सगण, भगण, रगण तथा अन्त में लघु और गुरु वर्ण के क्रम से ग्यारह वर्ण होते हैं। वियोगिनी छन्द को सुन्दरी नाम से भी जाना जाता है।

उदाहरण :

स स ज गु

I I S I I S I S I S

क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो

स भ र लगु

I I S S I I S I S I S

मृगशावैः सममेधितो जनः।

स स ज गु
। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
परिहासविजल्पितं सखे

स भ र ल गु
। । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
परमार्थेन न गृह्यतां वचः।। (अभिज्ञान० II.18)

प्रस्तुत श्लोक के विषम चरणों में क्रमशः सगण, सगण, जगण तथा गुरु वर्ण हैं तथा सम चरणों में क्रमशः सगण, भगण, रगण तथा अन्त में लघु तथा गुरु वर्ण हैं, अतः इस श्लोक में **वियोगिनी** छन्द है। इस श्लोक के अतिरिक्त अभिज्ञान० के VI-1 तथा VII-1 श्लोकों में भी **वियोगिनी** या **सुन्दरी** छन्द है।

छात्रों की सुविधा के लिए दोनों प्रसिद्ध नाटक–अभिज्ञानशाकुन्तलम् तथा स्वप्नवासवदत्तम् के श्लोक छन्दों के उदाहरण के रूप में यहाँ मात्रा–निर्देश सहित उद्धृत किए गए हैं। छात्र अपनी सुविधा के अनुसार कोई सा एक उदाहरण (एक छन्द के लिए) याद कर लें।